bihar board 8 geography Notes Chapter 6 एशिया

एशिया

पाठ का सारांश:- आकाशवाणी के प्रसारण में नारायण मित्तल समाचार सुना रहे थे "विश्व के नक्शे पर दक्षिणी सूडान नामक एक सम्प्रभु देश का उदय हुआ है। यह अफ्रीका महादेश का 54वाँ देश है।" राजू ने जैसे ही यह समाचार रेडियो पर सुना, उसके मन में तरह-तरह के सवाल उठने लगे। वह तुरंत अपनी दीदी से तरह-तरह के सवाल पूछने लगा—यह महादेश क्या होता है और भारत किस महादेश में है ? दीदी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया- विशालतम भू-भाग जहाँ विभिन्न प्रकार की भौगोलिक विभिन्नताएँ पाई जाती हैं-महादेश कहलाता है।
सामान्यत: कई देश इसके अन्तर्गत आते हैं। हमलोग एशिया महादेश में रहते हैं। एशिया विश्व का सबसे बड़ा महादेश है । इस महादेश में विश्व की सर्वाधिक आबादी रहती है। पृथ्वी के स्थल भाग का लगभग 30% हिस्से पर एशिया महादेश का विस्तार है। विश्व की आबादी की 60% जनसंख्या यहाँ रहती है। इतनी जानकारी हासिल करने के बाद राजू अपनी ऊँगलियों पर जोड़-घटाव कर उसने विश्व की सर्वाधिक आबादी लगभग 400 करोड़ बताया। फिर राजू की दीदी ने इन बातों की जानकारी के लिए उसे काफी सराहा और तब फिर एशिया के मानचित्र को दिखाकर उसकी चौहदी के बारे में पूछने लगी। राजू दीवार पर टंगे मानचित्र के पास जाकर खडा हो गया और बताया कि एशिया के पूरब में प्रशांत महासागर, पश्चिम में यूरोप और अफ्रीका महादेश तथा दक्षिण में हिन्द महासागर और उत्तर में आर्कटिक महासागर है। इस पर राजू की दीदी ने शबाशी देते हुए उसे आगे बताने को कहा। राजू भी उत्साहपूर्वक बताने लगा-"लाल सागर और स्वेज नहर एशिया को अफ्रीका महादेश से अलग करते हैं। यूरोप से यह प्रधानतः यूराल पवर्तमाला द्वारा अलग होता है। एशिया को यूरोप से अलग करने वाले में डारडानोलिस जलसंधि, बास्पोरस जलसंधि, मारमारा सागर, काला सागर, कैस्पियन सागर, यूराल नदी आदि हैं।"
एशिया महादेश पूर्वी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा से उत्तरी आर्कटिक महासागर तक फैला हुआ है। यह 10° दक्षिण से 80° उत्तर अक्षांश तथा 20° पूर्वी देशान्तर से पूरब दिशा की ओर अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा को पार करते हुए 170° पश्चिमी देशांतर तक फैला है। एशिया महादेश का आकार विशालकाय है, इसलिए यहाँ भौतिक और जलवायु संबंधी विविधता पायी जाती है।
यही कारण है कि यहाँ सांस्कृतिक-विविधता को प्राचीनकाल से ही पनपने और विकसित होने का मौका मिला है। एशिया महादेश की जलवायु में काफी विविधता है। समुद्र से अधिक दूरी के कारण समुद्र के सम प्रभाव का अभाव महाद्वीपता कहलाती है। इसमें जाड़ा अधिक ठंढा और गरमी अधिक गरम होती है । इसमें दैनिक व वार्षिक तापान्तर अधिक होता है तथा समुद्र से दूरी के कारण नमी युक्त हवाएँ यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते शुष्क हो जाती है, इसलिए यहाँ वर्षा अपेक्षाकृत कम होती है।

https://www.evidyarthi.in/